कुशाग्र जैन, लियोनार्डो दा विंची: पुनर्जागरण युग का सार्वभौमिक प्रतिभा, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ. 4-5*

लियोनार्डो दा विंची: पुनर्जागरण युग का सार्वभौमिक प्रतिभा

कुशाग्र जैन*

लियोनार्डो दा विंची (15 अप्रैल 1452 - 2 मई 1519) का नाम ही इतिहास के सबसे महान और प्रभावशाली व्यक्तित्वों में आता है। उनका योगदान केवल कला तक सीमित नहीं था, बल्कि वे एक वैज्ञानिक, अभियंता, आर्किटेक्ट, चिकित्सक, और दार्शनिक भी थे। उनका जीवन और कार्य एक अद्‌वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है कि कैसे एक व्यक्ति अपने ज्ञान और प्रतिभा के माध्यम से दुनिया को बदल सकता है। लियोनार्डो का जीवन और उनके कार्य एकमात्र संयोग नहीं थे, बल्कि उन्होंने अपनी अनगिनत कला कृतियों और विज्ञान में योगदान से हर क्षेत्र में स्थायी छाप छोड़ी।

लियोनार्डो का जन्म 15 अप्रैल 1452 को इटली के एक छोटे से गाँव विंची में हुआ था। वे एक अवैध संतान थे और उनका पालन-पोषण उनके दादा-दादी के द्‌वारा किया गया था। उनके पिता एक समृद्‌ध वकील थे, जबकि उनकी माँ एक किसान परिवार से थीं। हालांकि, लियोनार्डो को अपनी माँ के साथ समय बिताने का अवसर बहुत कम मिला, लेकिन यह अनुभव उनकी कला और सोच में एक नया दृष्टिकोण लेकर आया।

लियोनार्डो की कला शिक्षा का आरंभ फ्लोरेंस में हुआ था। वे प्रसिद्‌ध चित्रकार एंड्रिया डेल वेरोच्चियो के अधीन 14 वर्ष की आयु में कला सीखने आए थे। यहाँ, उन्होंने चित्रकला, मूर्तिकला, धातु-निर्माण, यांत्रिकी और वास्तुकला में प्रशिक्षण लिया। उनके काम का प्रारंभिक प्रभाव वेरोच्चियो पर था, लेकिन बहुत जल्दी उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनानी शुरू कर दी।

1476 में, लियोनार्डो ने फ्लोरेंस छोड़ दिया और मिलान चले गए, जहाँ उन्होंने स्फोर्जा परिवार के दरबार में काम करना शुरू किया। मिलान में रहते हुए उन्होंने कई महत्वपूर्ण कृतियाँ बनाई, जिनमें द लास्ट सपर और वर्जिन ऑफ द रॉक्स जैसी प्रसिद्‌ध पेंटिंग शामिल हैं।

द लास्ट सपर (1495-1498) शायद उनकी सबसे प्रसिद्‌ध कृति है, जिसमें उन्होंने मसीह और उनके शिष्यों के बीच के गहरे भावनात्मक संबंध को दर्शाया। इस चित्र में प्रत्येक पात्र का व्यक्तित्व और उनकी भावनाओं को बहुत ही गहराई से व्यक्त किया गया है, जो उस समय के अन्य चित्रकला कार्यों से बहुत अलग था। इसके अलावा, वर्जिन ऑफ द रॉक्स ने उनकी तकनीकी कुशलता और रंगों के मिश्रण में अद्‌वितीयता को प्रदर्शित किया।

लियोनार्डो दा विंची केवल एक महान कलाकार नहीं थे, बल्कि एक खोजी मनोवृत्ति वाले वैज्ञानिक भी थे। वे विज्ञान, गणित, और शरीर रचनाओं पर गहरे विचार करते थे। उन्होंने अपने नोटबुक्स में हज़ारों स्केच बनाए, जिसमें उड़ने वाली मशीनों से लेकर मानव शरीर के अंगों की संरचना तक सभी विषयों पर विस्तार से लिखा था।

उन्होंने मानव शरीर के हर अंग का विस्तृत अध्ययन किया और शरीर रचनाओं के बारे में कई वैज्ञानिक लेखन तैयार किए। उनका एक प्रमुख कार्य था मानव शरीर के अवयवों का चित्रण करना, जिसमें उन्होंने मांसपेशियों, हड्डियों, और रक्त वाहिकाओं के अंदरूनी संरचनाओं का सटीक चित्रण किया। इसके अलावा, उन्होंने हवाई जहाज और सैन्य मशीनों के बारे में भी कई डिजाइन बनाए थे, हालांकि वे कभी पूरी तरह से निर्माण में नहीं लाए गए।

लियोनार्डो का नाम आज सबसे अधिक मोनालिसा के साथ जुड़ा हुआ है। यह चित्र 1503 में शुरू किया गया था और इसे लियोनार्डो के जीवन का एक अद्वितीय कृति माना जाता है। मोनालिसा की मुस्कान और उसकी आँखों में जो रहस्यमयी भावनाएँ व्यक्त होती हैं, उन्होंने इसे कला की सबसे महान कृतियों में से एक बना दिया। यह चित्र आज भी लूव्र संग्रहालय, पेरिस में प्रदर्शित है और इसे दुनिया की सबसे प्रसिद्ध पेंटिंग माना जाता है।

लियोनार्डो के अंतिम वर्षों में उनका स्वास्थ्य काफी खराब हो गया था। 1517 में वे फ्रांसीसी राजा फ्रांसिस प्रथम के निमंत्रण पर फ्रांस में आकर बसे थे। वहां, उन्होंने कई और काम किए, लेकिन उनकी स्थिति deteriorating थी। एक दिन, वे एक स्ट्रोक से पीड़ित हो गए, जिससे उनका दाहिना भाग लकवाग्रस्त हो गया था। हालांकि, इसके बावजूद उन्होंने अपनी कृतियों पर काम जारी रखा। 2 मई 1519 को उनका निधन हो गया और उन्हें फ्रांस के अम्बोइस में दफनाया गया।

लियोनार्डो दा विंची की कृतियों ने न केवल उनकी पीढ़ी को प्रभावित किया, बल्कि आने वाली कई पीढ़ियों तक उनके कार्यों का प्रभाव बना रहा। उनके चित्रकला के नए दृष्टिकोण, जैसे कि स्फुमातो तकनीक, ने चित्रकला की दुनिया में एक क्रांति ला दी। इसके साथ ही, उनके वैज्ञानिक और तकनीकी विचार आज भी हमें प्रेरित करते हैं।

लियोनार्डो की प्रमुख कृतियाँ जैसे द लास्ट सपर, मोनालिसा, वर्जिन ऑफ द रॉक्स और उनके हजारों स्केच और नोटबुक्स उनके अद्वितीय योगदान के प्रतीक हैं। उनके कार्य न केवल कला के क्षेत्र में, बल्कि विज्ञान, इंजीनियरिंग और चिकित्सा के क्षेत्र में भी प्रभावी रहे हैं।

"सादगी ही सर्वोत्तम सौंदर्य है।" – लियोनार्डो दा विंची

लियोनार्डो दा विंची की यह पंक्ति उनके जीवन की पूरी philosophy को संक्षेप में प्रस्तुत करती है। उन्होंने हमेशा अपने कार्यों को सरलता और शुद्धता के साथ प्रस्तुत किया, और यही कारण है कि उनकी कृतियाँ आज भी जीवित हैं। उनका जीवन एक प्रेरणा है कि कैसे एक व्यक्ति अपने ज्ञान और प्रतिभा के माध्यम से समाज को नई दिशा दे सकता है।